भारत - ट्रिनिडाड और टोबेगो संबंध

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : भारत तथा ट्रिनिडाड और टोबेगो के संबंध 30 मई 1845 से आरंभ हुए थे जब 225 भारतीय गिरमिटिया श्रमिकों को लेकर प्रहला जहाज 'फेटल रजाक' तत्कालीन ब्रिटिश उपनिवेश ट्रिनिडाड के तट पर पहुँचा। भारत से बाद में आने वाले जहाजों के साथ ही उनकी संख्या बढ़ती गई। उन गिरमिटिया श्रमिकों की संतानें, जो अब अपनी पांचवीं पीढ़ी में पहुँच गई हैं, कुल जनसंख्या का लगभग 42 प्रतिशत हिस्सा हैं और उस देश के आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक ताने-बाने का अभिन्न भाग हैं। भारतीय मूल के लोगों (सबसे बड़ा जातीय समूह) की पर्याप्त जनसंख्या ने दोनों देशों के बीच घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों में भारी योगदान किया है।

प्रधान मंत्री कमला प्रसाद - बिसेसर की जनवरी 2012 में भारत यात्रा : प्रधान मंत्री कमला प्रसाद - बिसेसर (के पी बी) 5 से 14 जनवरी 2012 तक भारत के राजकीय दौरे पर आई थीं। प्रधान मंत्री कमला प्रसाद - बिसेसर के साथ 7 केबिनेट मंत्रियों वाला एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल और निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों के 160 सदस्यों का एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल तथा तृतीयक संस्थाओं एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रतिनिधि आए थे। इस दौरे के दौरान कई करारों और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए थे। वे जयपुर में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस 2012 में मुख्य अतिथि भी थी, और उन्हें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मान अवार्ड प्रदान किया गया था।

प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की ट्रिनिडाड और टोबेगो यात्रा : प्रधान मंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने नवंबर 2009 में सी एच ओ जी एम शिखर सम्मेलन के लिए प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

हाल ही की यात्राएं: विगत दो वर्षों के दौरान भारत की ओर से विभिन्न द्विपक्षीय मंत्री स्तरीय / आधिकारिक यात्राएं की गई थी। उनमें से मुख्य यात्राएं हैं : द्विपक्षीय वार्ता के लिए विशेष सचिव (ए एम एस एवं सी पी वी) श्री आर स्वामीनाथन के नेतृत्व में 3 सदस्यीय शिष्टमंडल (जून 2015); औषधीय पौधों के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के संदर्भ में आयुष से एक दो सदस्यीय शिष्टमंडल (अप्रैल 2014); माननीय संस्कृति मंत्री श्रीमती चंद्रेश कुमारी कटोच के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय वरिष्ठ आधिकारिक शिष्टमंडल (अक्टूबर-नवंबर 2013); माननीया महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा तीरथ के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय 5 सदस्यीय शिष्टमंडल ने ट्रिनिडाड और टोबेगो का दौरा किया (मई - जून 2013); माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन राज्य मंत्री (आयुष) श्री एस. गांधीसेलवन ने परंपरागत चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग के संदर्भ में दौरा किया (अक्टूबर 2012)।

ट्रिनिडाड और टोबेगो की ओर से महत्वपूर्ण यात्राओं में निम्नलिखित शामिल हैं- मिनिस्टर ऑफ दी पीपुल एंड सोशल डवलपमेंट, डॉ0 ग्लेन रामधरसिंह के नेतृत्व में एक 4 सदस्यीय शिष्टमंडल (जून 2013 और फरवरी 2014); एक 3 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 6ठे विश्व आयुर्वेद कांग्रेस में भाग लिया (नवंबर 2014); वैश्विक अनुसंधान एवं विकास सम्मेलन में एक 3 सदस्यीय शिष्टमंडल (नवंबर 2014); सूरजकुण्ड शिल्प मेला में भाग लेने के लिए मिनिस्टर फॉर कम्यूनिटी डवलपमेंट मिस्टर विन्स्टन पीटर ''जिप्सी'' के नेतृत्व में एक चार सदस्यीय शिष्टमंडल (जनवरी - फरवरी 2013)।

संसदीय आदान - प्रदान : भारत और ट्रिनिडाड एवं टोबेगो के संसद सदस्यों के परंपरागत रूप से घनिष्ठ संबंध रहे हैं। माननीया लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व में एक 6 सदस्यीय शिष्टमंडल ने कॉमनवैल्थ स्पीकर्स एंड प्रिसाइडिंग ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस (सीएसपीओसी) में भाग लेने के लिए जनवरी 2012 में ट्रिनिडाड और टोबेगो का दौरा किया था। जवाब में, ट्रिनिडाड और टोबेगो के संसद सदस्यों ने मार्च 2012 में सीनेट के अध्यक्ष टिमोथी हैमल स्मिथ तथा हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्ज के स्पीकर माननीय वेड मार्क के संयुक्त नेतृत्व में एक सात सदस्यीय संसदीय शिष्टमंडल के रूप में भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान भारत - ट्रिनिडाड और टोबेगो संसदीय मैत्री संघ का गठन किया गया जिसके भारतीय सह अध्यक्ष श्री राम विलास पासवान, संसद सदस्य हैं।

महत्वपूर्ण द्विपक्षीय करार और समझौता ज्ञापन : विगत वर्षों में दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों की आधारशिला रखते हुए अनेक करारों और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं। इनमें शामिल हैं : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सहयोग (1985); सांस्कृतिक सहयोग करार (1987); तकनीकी सहयोग (1997); व्यापार करार (1997); कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा (1997); ट्रिनिडाड और टोबेगो में लघु उद्योगों का विकास (1997); विदेश कार्यालय परामर्श (1997); दोहरे कराधान से बचने के लिए करार (फरवरी 1999); निम्न लागत आवास में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (1999); राजनैतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय एवं सांस्कृतिक सहयोग के संबंध में अंतर सरकारी आयोग करार (2003); द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार (बी आई पी पी ए) (2007); भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई सी ए आर) तथा मिनिस्ट्री ऑफ फूड प्रॉडक्शन, लैण्ड एंड मरीन अफेयर्स के साथ कृषि क्षेत्र में समझौता ज्ञापन और कार्य योजना (2012); द्विपक्षीय वायु सेवा करार (बी ए एस ए) (2012); तकनीकी सहयोग करार (शिक्षा के संबंध में) (2012); सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (वर्ष 2012-14 के लिए) (2012); परंपरागत चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन (2012); हिंदी एवं भारतीय अध्ययन विद्यापीठों की स्थापना के लिए आई सी सी आर एवं वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय (यू डब्ल्यू आई) के बीच समझौता ज्ञापन (2012); केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद और वेस्ट इंडीज

विश्वविद्यालय (यूडब्ल्यूआई) के बीच वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय (यू डब्ल्यू आई) में एक आयुर्वेद विद्यापीठ की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन (2012); औषधीय पौधों के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय चिकित्सीय पादप बोर्ड (एन एम पी बी); वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय (यू डब्ल्यू आई) (नेशनल हर्बेरियम एंड डिपार्टमेंट ऑफ लाइफ साइंसेज, ट्रिनिडाड एंड टोबेगो) के बीच समझौता ज्ञापन (अप्रैल 2014) और परस्पर सहयोग पर विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान, वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय के बीच एम ओ यू (जून 2015)।

संयुक्त आयोग बैठक (जे सी एम) : भारत-ट्रिनिडाड और टोबेगो संयुक्त आयोग की बैठक नवंबर 2011 में नई दिल्ली में हुई थी। विदेश एवं संचार मंत्री डॉ0 सूरजरतन रामबचन ने ट्रिनिडाड और टोबेगो के शिष्टमंडल का नेतृत्व किया था और भारतीय पक्ष का नेतृत्व विदेश मंत्री श्री एस. एम. कृष्णा ने किया था। इसमें चर्चा के विषयों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वायु मार्गीय परिवहन, कृषि, एस एम ई, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, प्रौद्योगिकी सहयोग, ऊर्जा एवं व्यापार शामिल थे। संयुक्त आयोग की अगली बैठक पोर्ट ऑफ स्पेन में आयोजित होगी।

प्रवासी भारतीय दिवस और प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार में भागीदारी : प्रधान मंत्री कमला प्रसाद बिसेसर जयपुर में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस 2012 में शामिल हुई थीं और उन्हें प्रवासी भारतीय सम्मान अवार्ड प्रदान किया गया था। प्रधान मंत्री कार्यालय के वरिष्ठ मंत्री डॉ0 लेनी सेठ ने नई दिल्ली में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस 2010 में भाग लिया था और प्रवासी भारतीय सम्मान अवार्ड प्राप्त किया। वर्ष 2008 के प्रवासी भारतीय दिवस में नेशनल काउंसिल ऑफ इंडियन कल्चर को प्रवासी भारतीय सम्मान अवार्ड प्रदान किया गया था। वर्ष 2005 (मुम्बई) और 2008 (दिल्ली) में आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में प्रधान मंत्री बासदेव पाण्डे ने प्रवासी भारतीय दिवस में भाग लिया। वर्ष 2005 में, उन्हें प्रवासी भारतीय सम्मान अवार्ड प्रदान किया गया। जनवरी 2006 में, पेट्रोलियम मंत्री डॉ0 लेनी सेठ ने हैदराबाद में प्रवासी भारतीय दिवस समारोह में आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

आयुर्वेद तथा परंपरागत भारतीय दवाओं का संवर्धन : आयुर्वेद तथा परंपरागत भारतीय चिकित्सा की जानकारी को बढ़ाने और प्रसारित करने के लिए आयुष विभाग द्वारा प्रायोजित एक आयुष सूचना केंद्र माननीय सूरजरतन रामबचन, मिनिस्टर ऑफ लोकल गवर्नमेंट द्वारा उच्चायोग में खोला गया था। यह केंद्र अक्टूबर 2012 में माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन राज्य मंत्री श्री एस. गांधीसेलवन द्वारा ट्रिनिडाड और टोबेगो की जनता को समर्पित किया गया था।

मिशन के तत्वावधान में फोरमों की स्थापना : 'ट्रिनिडाड और टोबेगो में भारतीय राष्ट्रिकों का फोरम (एफआईएनटीटी)' 17 सितंबर 2011 को आरंभ किया गया था। ट्रिनिडाड और टोबेगो में भारतीय राष्ट्रिकों का फोरम (एफआईएनटीटी) का उद्देश्य ट्रिनिडाड और टोबेगो में रह रहे सभी भारतीय व्यावसायिकों को मानवतावादी कार्य करने के लिए एकजुट करना है। ट्रिनिडाड और टोबेगो में प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय के ओवरसीज इंडियन यूथ क्लब (ओ आई वाई सी) चैप्टर के रूप में 'नो इंडिया यूथ- ट्रिनिडाड एंड टोबेगो (के आई वाई टी टी)' का गठन 'भारत को जानें कार्यक्रम (के आई पी)' में भाग लेने वालों के बीच बेहतर संवाद के लिए अक्टूबर 2011 में किया गया था। 'नो इंडिया यूथ - ट्रिनिडाड एंड टोबेगो (के आई वाई टी टी)' भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकासों को उजागर करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम, टीवी चैनलों पर चर्चा जैसे कार्यकलाप करता है। 'इंडियन अल्यूमिनी एसोशिएसन ऑफ ट्रिनिडाड एंड टोबेगो (आई ए ए टी टी) में या तो भारत में पढ़े हुए या भारत में प्रशिक्षित अध्येता और अन्य व्यावसायिक शामिल हैं।

आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध : भारत तथा ट्रिनिडाड और टोबेगो के बीच जनवरी 1997 में हस्ताक्षरित व्यापार करार में एक दूसरे को मोस्ट फेवर्ड नेशन (एम एफ एन) का दर्जा दिया गया है। हालांकि यह कई वर्षों से 100 मिलियन अमरीकी डॉलर पर स्थिर है, 2014-15 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार बढ़कर 233.9 मिलियन अमरीकी डॉलर हो गया है (ट्रिनिडाड और टोबेगो को भारत का निर्यात 165.48 मिलियन अमरीकी डॉलर तथा ट्रिनिडाड और टोबेगो का निर्यात 68.42 मिलियन अमरीकी डॉलर था)। इस क्षेत्र में इसकी आर्थिक रूप से प्रभावशाली भूमिका के आधार पर और क्षेत्रीय तथा द्विपक्षीय अधिमानता व्यापारिक करारों की सहायता से, ट्रिनिडाड और टोबेगो भारत के निर्यातकों को कैरीबियाई क्षेत्र तथा इसके परे अच्छे अवसर प्रदान करता है। वस्त्र, गारमेंट, फार्मास्यूटिकल, ऊर्जा, मशीनरी तथा पेट्रो रसायन, कृषि, आई टी तथा फिल्म एवं म्यूजिक उद्योग में द्विपक्षीय व्यापार के विकास की संभावनाएं हैं।

ट्रिनिडाड और टोबेगो को भारतीय सहायता : ट्रिनिडाड और टोबेगो को भारतीय सहायता में आईटीईसी कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण, विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति, भारतवंशी युवाओं के लिए 'भारत को जानें' कार्यक्रम तथा ट्रिनिडाड और टोबेगो के नागरिकों को आईसीसीआर द्वारा सांस्कृतिक एवं अन्य छात्रवृत्तियां शामिल हैं। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में ट्रिनिडाड और टोबेगो को आई टी ई सी कार्यक्रम के तहत सुविधाएं प्रदान की गई। जनवरी 2012 में प्रधान मंत्री कमला प्रसाद बिसेसर की भारत यात्रा के बाद, भारत सरकार द्वारा ट्रिनिडाड और टोबेगो के राष्ट्रिकों के लिए वार्षिक प्रशिक्षण स्लॉटों को बढ़ा दिया गया। इस समय हम 35 स्लॉट प्रदान कर रहे हैं। 2013-14 में, 36 स्कॉलर तथा 2014-15 में 20 स्कॉलर ने इन सुविधाओं का लाभ उठाया। हमने नारियल एवं चावल की खेती में भी विशेषज्ञों को प्रतिनियुक्त किया है। चावल उत्पादन विशेषज्ञ डा.

जी जे एन राव, जिन्होंने 25 अगस्त 2014 को प्रतिनियुक्त की एक वर्ष की अवधि के लिए ट्रिनिडाड और टोबेगो के खाद्य उत्पादन मंत्रालय में जॉइन किया था, अब अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद वहां से चले आए हैं। 2014-15 में एक छात्र और 2012-13 में 3 छात्रों को आई सी सी आर छात्रवृत्ति प्रदान की गई। वर्ष 2013 में 17, वर्ष 2014 में 15 और 2015 में अगस्त तक 7 प्रतिभागियों ने 'भारत को जानें' कार्यक्रम के अंतर्गत भारत का दौरा किया है। अब तक डायसपोरा के 99 युवा सदस्यों ने इस कार्यक्रम के तहत भारत का दौरा किया है।

संस्कृति : मिशन अपनी सांस्कृतिक विंग, महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान (एम जी आई सी सी), जिसकी स्थापना द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत जनवरी 1997 में की गई थी, के माध्यम से सांस्कृतिक कूटनीति की गतिविधियों में रत है। महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान का प्रशासन उच्चायोग के समग्र नियंत्रण में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई सी सी आर) द्वारा किया जाता है। महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान का प्राथमिक उद्देश्य भारतीय संस्कृति का प्रसार - प्रचार करना एवं संपोषित करना तथा ट्रिनिडाड और टोबेगो एवं भारत के लोगों के बीच सद्भाव का विकास करना है। ट्रिनिडाड और टोबेगो में अनेक केंद्रों में भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य में भारत आधारित एवं स्थानीय शिक्षकों द्वारा कक्षाएं नियमित रूप से चलाई जाती हैं। इस समय संस्थान में वोकल म्यूजिक एवं तबला में एक भारत आधारित शिक्षक, भरतनाट्यम एवं कथक नृत्य में 2 स्थानीय शास्त्रीय नृत्य शिक्षक और सप्ताहांत पर योग कक्षाएं प्रदान करने के लिए एक स्थानीय योग शिक्षक हैं। उच्चायोग 7 अलग - अलग स्थानों पर हिंदी कक्षाएं भी चलाता है। यह संस्थान प्रदर्शनियां, संगीत और नृत्य कार्यक्रम, मासिक 'कला संध्या', व्याख्यानमाला और कार्यशालाएं आदि जैसे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित करता रहा है। महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान (एम जी आई सी सी) आई सी सी आर की सामान्य सांस्कृतिक छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत वार्षिक छात्रवृत्तियां भी प्रदान करता है।

विद्यापीठ: वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय के साथ सहयोगात्मक संबंधों के लिए मिशन ने तीन विद्यापीठों की स्थापना की है, नामत: (i) हिंदी, (ii) समसामयिक भारतीय अध्ययन, और (iii) आयुर्वेद।

आयुर्वेद तथा परंपरागत भारतीय दवाओं का संवर्धन : आयुर्वेद तथा परंपरागत भारतीय चिकित्सा की जानकारी को बढ़ाने और प्रसारित करने के लिए आयुष विभाग द्वारा प्रायोजित एक आयुष सूचना केंद्र माननीय सूरजरतन रामबचन, मिनिस्टर ऑफ लोकल गवर्नमेंट द्वारा उच्चायोग में

खोला गया था। यह केंद्र अक्टूबर 2012 में माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन राज्य मंत्री श्री एस. गांधीसेलवन द्वारा ट्रिनिडाड और टोबेगो की जनता को समर्पित किया गया था।

हिंदी का प्रचार - प्रसार : हिंदी शिक्षण कार्यकलापों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है, क्योंकि स्थानीय जनता में हिंदी के प्रति रुचि में वृद्धि हुई है। रेडियो और टेलीविजन दोनों में स्थानीय मीडिया में हिंदी की प्रमुखता से मौजूदगी ने इस रुचि को बढ़ा दिया है और लिंग, आयु तथा जातीयता के भेद से ऊपर उठकर स्थानीय जनता के बीच हिंदी में प्रवीणता प्राप्त करने की इच्छा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। मिशन इसके लिए देश के विभिन्न भागों में हिंदी कक्षाएं आयोजित करता है। ये कक्षाएं 20 वर्ष से भी अधिक समय से चल रही हैं और हाल ही में इन्हें व्यवस्था से जोड़ दिया गया है। मिशन अनुदानों और हिंदी की पठन सामग्री और सॉफ्टवेयर के प्रसार के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक निकायों के साथ सहयोग करता रहा है। हिंदी दिवस/विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर प्रति वर्ष हिंदी सम्मान (पुरस्कार) प्रदान किए जाते हैं। इसके अलावा, हिंदी अधिगम के विभिन्न विभागों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभाशाली छात्रों को प्रवीणता प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाते हैं। इसके अलावा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अनुसार, स्थानीय हिंदी शिक्षकों द्वारा भाषा शिक्षण की पद्धतियां और तकनीकों के आधार पर नियमित रूप से कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। शिक्षकों को पुस्तकों और शिक्षण सामग्री का वितरण भी किया जाता है। विभिन्न स्थानीय हिंदी शिक्षण संस्थाओं ने हिंदी के संवर्धन के लिए मिशन के साथ सहयोग किया है।

भारतीय समुदाय : ट्रिनिडाड और टोबेगो में अनिवासी भारतीय समुदाय में लगभग 600 परिवार (1800 व्यक्ति) शामिल हैं जो व्यवसाय, शिक्षण चिकित्सा एवं अन्य व्यवसायों से जुड़े हैं। मिशन भारतवंशियों (ट्रिनिडाड और टोबेगो की कुल जनसंख्या का लगभग 42 प्रतिशत) के साथ निकट संपर्क बना कर रखता है और उनके लिए अभिप्रेत ओसीआई योजना, भारत को जानें कार्यक्रम (के आ ईपी), ट्रेसिंग दी रूट कार्यक्रम, भारतवंशी बच्चों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रम (एस पी डी सी) और प्रवासी भारतीय सम्मान अवार्ड जैसी भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं को आगे बढ़ाने में सक्रिय रहा है। मिशन ट्रिनिडाड और टोबेगो और साथ-साथ प्रत्यायित देशों में रहने वाले अनिवासी भारतीयों को नियमित रूप से और तत्काल काउंसलर सेवा प्रदान करता है।

भारतीय नागरिकों के लिए वीजा से छूट : ट्रिनिडाड और टोबेगो की सरकार ने 3 माह की अवधि के लिए पर्यटन एवं व्यवसाय के प्रयोजनार्थ ट्रिनिडाड और टोबेगो का दौरा करने वाले भारतीय नागरिकों के लिए वीजा की आवश्यकता से छूट प्रदान की है। ट्रिनिडाड और टोबेगो के नागरिकों के लिए ई-टूरिस्ट वीजा के लिए प्रस्ताव भारत में विचाराधीन है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय उच्चायोग, पोर्ट ऑफ स्पेन की वेबसाइट
http://www.hcipos.in/

***

जनवरी, 2016